प्रातः सभा 7-1-69 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चों से बाप पूछते हैं, आत्माओं से परमात्मा पूछते हैं, यह तो जानते ही हम परम पिता परमात्मा के सामने बैठे हैं। उनको अपना रथ तो नहीं है। यह तो निश्चय है ना। इस भृकुटि के बीच में बाप का निवास स्थान है। बाप ने खुद कहा है मैं इनके भृकुटि के बीच में बैठता हूं। इनका शरीरलोन पर लेता हूं। आत्मा भृकुटि के बीच में बैठती है तो बाप भी आकर वहां ही बैठते हैं। ब्रह्मा है तो शिव बाबा भी है। अगर ब्रह्मा नहीं होता तो शिव बाबा भी नहीं होता। अगर कोई कहे हम तो शिव बाबा को ही याद करते हैं ब्रह्मा है नहीं। परन्तु शिव बाबा बोलेंगे कैसे। ऊपर में तो सदैव शिव बाबा को याद करते आये। अभी तुम बच्चों को पता है हम बाप के पास यहां बैठे हैं। ऐसे तो नहीं समझेंगे शिव बाबा ऊपर में है। जैसे भक्ति-मार्ग में कहते थे शिव बाबा ऊपर में है उनकी प्रतिमा यहां पूजी जाती है। यह बातें बहुत समझने की हैं। जानते हैं बाप ज्ञान का सागर नालेजफुल है। कहां से नालेज सुनाते हैं। क्या ऊपर से सुनाते हैं। या नीचे आया है, ब्रह्मा तन से सुनाते हैं। कई कहते हैं ब्रह्मा को नहीं मानते। परन्तु शिव बाबा खुद ब्रह्मा तन द्वारा कहते हैं कि मुझे याद करो। यह समझ की बात है ना। माया ऐसी पकड़ती है जो एकदम नाक में दम उड़ा देती है। सम्बरवन समझदार को भी नम्बरवन मूर्ख बना देती है। कितना भी अच्छा बच्चा हो, ऐसे2 ख्यालात लाती है जैसे माया। कहते हैं हम ब्रह्मा को नहीं मानते। ब्रह्मा तो खुद ही कहते हैं शिव बाबा को याद करो। परन्तु यह नहीं कहता। इनमें ही शिव बाबा कहते हैं मुझे याद करो। यह मंत्र मैं ब्रह्मा द्वारा देता हूं। ब्रह्मा न होता तो मंत्र कैसे देता। ब्रह्मा नहीं होता तो तुम शिव को फिर कैसे मानेंगे। शिव बाबा पास कैसे बैठेंगे। अच्छे2 महारथी को भी माया इसमें सत्यानाश कर देती है। ऐसे ख्यालात में लाकर। जो कहते हैं हम ब्रह्मा को नहीं मानते उनकी क्या गति होगी। उनको डैमफुल कहेंगे। माया बड़ी जबरदस्त है। एकदम मुंह फिराकर पिछाड़ी कर देती है। अभी तुम्हारा कांध (मुंह) शिव बाबा ने सामने किया है। सम्मुख बैठे हो। फिर जो ऐसे समझते हैं ब्रह्मा तो कुछ नहीं उनकी क्या गति होगी। दुर्गति को पा लेते हैं। कुछ भी ज्ञान नहीं। मनुष्य पुकारते हैं ओ गाड फादर पर यह गाड फादर सुनता है क्या। उनको तो कहते हैं ना लिबरेटर आओ। वा वहां बैठे हो लिबरेट करेंगे। कल्प2 पुरुषोत्तम संगम युग पर ही बाप आते हैं। जिसमें मैं आते हैं अगर उनको ही उड़ा दे तो क्या कहेंगे। सम्बरवन तमोप्रधान। निश्चय होते हुये माया फिराये देती। इतना उसमें बल है जो एकदम वर्थ नाट पेनी बना देती है। एकदम महामूर्ख बना देती है। ऐसे भी कोई न कोई सेन्टर्स पर हैं। इसलिये बाप कहते हैं खबरदार रहो। माया ऐसी है जो एकदम मुंह फिराकर उल्टा कर देंगी। फिर उनका क्या हाल होगा। बिलकुल अधम गति को पा लेंगे। भल किसको सुनाते भी रहे सुनी हुई बातें परन्तु वह जैसे पंडित फिसल बन जाते। जैसे बाबा पंडित की कहानी बताते हैं ना। उसने कहा राम राम कहने से सागर पार हो जायेंगे। यह एक कहानी बनाई हुई है। समय तुम बाप की याद से विषय सागर से क्षीर सागर में जाते हो ना। उन्होंने तो भक्ति मार्ग में ढेर कहानी बना दी हैं। पंडित औरों को कहता था। खुद बिलकुल चट खाते में था। खुद विकारों में जाते रहना और दूसरों को कहना निर्विकारी बनो। उनका क्या असर होगा। पंडित भी ऐसा था। भाई ने पंडित के कहने पर विश्वास रखी। राम राम कहते पार हो गई। एक दिन पंडित को निमंत्रण दिया आप भी चलो हमारे घर भोजन के लिये। रास्ते में एक नदी मिली। पंडित बौलाबौट कहां? अरे आप ने तो कहा था राम राम कहने से सागर पार हो जायेंगे। यह तो नदी ही है। तो उनको लज्जा आने लगी। तो यह एक दृष्टान्त बनाया है। उनको सिर्फ पंडित ऐसे भी ब्रह्माकुमारियां हैं। खुद में निश्चय नहीं, दूसरों को सुनाते रहते हैं। इसलिये कहां2 सुनाने वालों से सुनने वाले तीखे चले जाते हैं। अच्छे2 बड़े2 महारथियों से भी वह तीखे चले जाते हैं। जो बहुतों की सेवा हैं वह जरूर प्यारे तो लगते हैं ना। पंडित झूठा निकल पड़ा तो उनको कोई प्यार करेंगे। फिर प्यार उन जावेंगा जो प्रैक्टीकल में याद करते हैं। अच्छे2 महारथियों को भी माया हप कर लेती है। बहुत हप हो गया बाबा भी समझते हैं अभी तो कमातीत अवस्था नहीं है। जब तक लड़ाई में तैयार न हो। एक तरफ लड़

7-1-69

ोंगीदूसरे तरफ कर्मातीतअवस्था होंगी। पूरा कनेक्शन है। फिर पढ़ाई पूरी हो जाती है। ट्रान्सफर हो जावेंगे। पहले
द्र माला बनती है। यह बातें और कोई नहीं जानते। तुम समझते हो इस दुनिया को बदलना है। वह तो
मझते हैं अजन 40हजार वर्ष पड़े हैं। तुम समझते हो विनाश सामने खड़ा है। अभी तुम हो मैनारिटी। वह हैं
जोरिटी। तो तुम्हारा कौन मानेंगे। जब तुम्हारी वृध्दि हो जावेंगी फिर तुम्हारे योगबल से बहुत खेंचकर आवेंगे।
जतना तुम्हारे से कट निकलती जावेंगी उतना ही बल भरता जावेंगा। ऐसे नहीं बाबा जानीजाननहार है। यहां
ाकर सभी को देखते हैं। सभी के अवस्थाओं को जानते हैं। बाप बच्चों की अवस्था को नहीं जानेंगे? सभी कुछ
ालूम रहता है। इसमें अन्तर्यामी की बात नहीं। अभी तो कर्मातीत अवस्था हो न सके। कड़ी2 भूले होना सम्भव
। महारथियों से भी होती है। अरे बात-चित चलन आदि सभी प्रसिध हो जाते हैं। अभी तो दैवीचलन बनानी
। देवतायें सर्वगुण सम्पन्न ... हैं ना। अभी तुमको ऐसा बनना है। कहां यह असुर कहां देवतायें। परन्तु माया
कसको भी छोड़ती नहीं। छुई-मुई बना देती है। एकदम मार डालती है। 5सीढ़ी है ना। देह-अभिमान आने से
ा ऊपर से एकदम गिरते हैं। गिरा और मरा। आजकल अपने को मारने लिये कैसे2 उपाय लेते हैं। एकदम 20मंजिल
कूदते हैं। तो एकदम खत्म हो जाते हैं। ऐसे भी न हो फिर हास्पिटल में पड़े रहेजो दुख भोगें। 5मंजिल से
रे और न मरे तो कितना दुःख भोगते रहेंगे। कोई अपने को आग लगाते हैं, अगर उनको कोई बचा लेते हैं
ा उनको कितना दुःख सहन करना पड़ता है। जल जाये तो आत्मा भाग जावेंगी ना। इसलिये जीवघात करते
। शरीर को ही खत्म कर देते हैं। समझते हैं शरीर छोड़ने से दुःखों से छूट जावेंगे। जोश आता है तो बस।
ई तो हास्पीटल में कितना दुःख भोगते रहते हैं। अगर डाक्टर समझते हैं यह छूटनहीं सकते हैं, इनसे तो
ली देदें तो खत्म हो जावे। परन्तु यह समझते हैं ऐसे गोली देकर मारना महापाप है। वास्तव में यहपाप
हीं हैं। यह तो किसको दुःख से छूडना पुण्य का काम है। आत्मा खुद कहती है इस पीड़ा भोगने से तो
ोर छोड़ दें। हमारा शरीर छूट जाये। अभी शरीर कौन छूड़ावे? कोई तो आपें भी गोली ले लेते हैं। यह है अपार
खों की दुनिया। वहां है अपार सुख। तुम बच्चे समझते हो हम अभी रिटर्न होते हैं। दुःखधाम से सुखधाम जाते
। अभी बाप जो सुखधाम का मालिक बनाते हैं उनको याद करना है। इन द्वारा बाप समझाते हैं। चित्र भी
ना ब्रह्मा द्वारा राजयोग की स्थापना। तुम कहते हो बाबा हम आप से अनेक बार स्वर्ग का वरसा
े आये हैं। बाप भी संगम पर ही आते हैं जब कि दुनिया को बदलना है। तो बाप कहते हैं मैं आया हूं
ुम बच्चों को दुःख से छूड़ाकर सुख के पावन दुनिया में ले जाने। पावन दुनिया में भूठ भर रहते हैं। बुलाते हैं
पतित-पावन ... यह थोड़ेही समझते हैं हम महाकाल को बुलाते हैं कि हमको इस छी छी दुनिया से पार ले
ो। जरूर बाबा आवेंगा। हम मरेंगे तब तो पीस होंगी ना। शांति2 करते रहते हैं। शान्ति तो है शान्तिधाम की
न्तु इस दुनिया में शान्ति कैसे हो जब तक कि इतने ढेर मनुष्य हैं। सतयुग में सुख शान्ति था। अभी कलियुग
अनेक धर्म हैं वह जब खत्म हो एक धर्म की स्थापना हो तब तो सुख शान्ति होवे ना। हाहाकार के बाद
फिर जयजयकारहोती है। आगे चल देखना नोट की बाजार कितनी गर्म होती है। कैसे करते हैं। बम्ब से भी
ग लगती है। एक दो वर्ष चलकर देखो फिर तो बहुत कहेंगे बराबर विनाश होगा। तुम जानते हो यह सृष्टि
चक्र तो फिरना ही है। विनाश जरूर होना है। एक धर्म की स्थापना बाप कराते हैं राजयोग भी सिखलाते हैं।
ो सभी अनेक धर्म खलास हो जावेंगे। गीता में कुछ दिखाया नहीं है। 5पाण्डव और कुत्ता हिमालय में जाकर
गये। फिर रिजल्ट क्या? प्रलय कर दी। भल जलमय होती है परन्तु सारी दुनिया जलमय नहीं हो सकती।
त तो अविनाशी पवित्र खण्ड है। उसमें भी आबू सबसे पवित्र तीर्थ स्थान है जहां बाप
र सर्व की सदगति करते हैं। दिलवाला मंदिर कैसा अच्छा यादगार है। कितना अर्थ सहित है। परन्तु जिन्
बनाया है वह नहीं जानते। फिर अच्छे समझु तो थे ना। द्वापर में जरूर अच्छी समझ होगी। कलियुग में तो है
तमोप्रधान। द्वापर में फिर भी तमोप्रधान बुध होंगी। सभी मंदिरों से यह ऊंच है जहां तुम बैठे हो। तुम

7-1-69

नानते हो हम है चैतन्य। वह है जड़। हमारा ही यादगार है। परन्तु हम चैतन्य दिलवाला मंदिर लिख नहीं सकते हैं। जैनीलोग हंगामा मचा देवे। फिर यह कौन हैं। तुम तो जानते हो यह हमारा ही यादगार है। वैकुण्ठ कोई छत में थोड़ेही होता है। परन्तु बनावे कहां। इसलिये युक्ति से बना हुआ है। यह भी तुम समझते हो यह ही हमारा पूरा यादगार है।। बाकी 5-7 वर्ष यह मंदिर बनेंगे फिर तो टूटने का समय आवेगा। कोई कहां ह कोई कहां विनाश होगा, तो होलसेल से मौत होगा। सभी खलास हो जावेंगे। होलसेल महाभारत लड़ाई होगी। फिर सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी एक खण्ड रहेगा। भारत बहुत छोटा होगा। बाकी सभी सभी खलास हो जावेंगे। स्वर्ग कितना छोटा होगा। यह ज्ञान अभी तुम्हारी बुध में है। कोई को समझाने में भी देरी नहीं लगती। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। यहां कितने ढेर मनुष्य हैं। जो वहां कितने थोड़े मनुष्य होंगे। यह सभी खत्म हो जावेंगे। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरफी रिपीट होगी। जरूर स्वर्ग में रिपीट करेंगे। पिछाड़ी में तो नहीं जावेंगे। यह ड्रामा का चक्र अनादि है। जो फिरता ही रहता है। इस तरफ कलियुग उस तरफ है सतयुग। हम है संगम पर। यह भी समझते हो बाप आते हैं, बाप को रथ तो जरूर चाहिए ना। आत्मा जब शरीर में आती है तब ही चुरपुर करती आत्मा निकल जाये तो शरीर जड हो जाता। तो बाप समझाते हैं अभी तुम घर जाते हो। यह बनने का है। दैवीगुण भी धारण करनी है। माया ऐसी है जो एकदम चुहरा बना देती है। तब लिखते हैं बाबा हमने काला कर दिया। माया ने जीत लिया। नानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर हरामखोर ... बाप को सर्वव्यापी कितनी ग्लानी करते हैं। देवताओं की भी ग्लानी कर दी है। व्यभिचार से लव-कुश पैदा हुये। यह हो कैसे सकता। तो ऐसी बातें बनाने वालों को नहीं चर्याई ही कहेंगे, तो और क्या कहेंगे। एकदम मैडचैप्स बन जाते हैं। तो भारत क्या था। ऐसी2 झूठी कहानियां सुनकर भी कितना खुश होते हैं। भागवद, महाभारत, गीता में ज्ञान की जितनी ग्लानी की है उतनी और कोई शास्त्रों में नहीं की है। इसलिये तुम लिखते हो सच्ची गीता-पाठशाला। बाकी भक्ति मार्ग में हैं झूठे। तो भी कितना हंगामा मचाते हैं। खेल कितना वन्डरफुल है। यह भी बच्चों को समझाया जाता है रावण राज्य और रामराज्य किसको कहा जाता है। पतित, से पावन कैसे बनते हैं पावन से पतित कैसे बनते हैं। यह खेल का राज बैठ समझाते हैं। बाप नालेजफुल वीजरूप है ना। चैतन्य है। वो आकर समझाते हैं। बाप ही कहेंगे सारे कल्प वृक्ष का राज समझा। इनमें क्या2 होता है, तुमने इसमें कितनी बजाया। आधा कल्प है देवी राज्य आधा कल्प है आसुरी राज्य। अच्छे2 बच्चे जो हैं उन्हों की बुधि में सारी नालेज रहती हैं। बाप आप समान टीचर बनाते हैं ना। टीचर्स में भी नम्बरवार होते हैं। कई तो टीचर होकर फिर बिगड़ पड़ते हैं। बहुतों को सिखलाकर फिर खुद खत्म हो जाते हैं। छोटे2 बच्चों में भिन्न2 संस्कार वाले हैं। कोई तो देखो नम्बरवन शैतान। कोई फिर परिस्तान में जाने लायक। बाप समझाते हैं ज्ञान न उठाने से भी चलन न सुधारने से फिर सभी को दुःख देते रहते हैं। यह भी शास्त्रों में दिखाया हुआ है। असुर छिपते थे। असुर तो सभी है ना। असुर सुनकर जाते हैं फिर टेटर बन कितनी तकलीफें देते हैं। यह तो सभी होता रहता है। कई बड़े शैतान निकलते हैं। घमसान मचाते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप को ही स्वर्ग की स्थापना करनी पड़ता है। बहुत असुर बन जाते हैं। सभी से बड़े ते बड़े असुर हैं सन्यासी। जो कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी कहते हैं भगवान ने लिखा है। अभी फिर भगवान कैसे बैठ लिखेगा। सतयुग में शास्त्र कहां से आये। असुर लोग कहदेते हैं यह शास्त्र आदि सभी परम्परा से चले आ रहे हैं। माया बड़ी जबरदस्त है। दान देते हैं फिर माया बुधि फिर देती है। आधा को जरूर माया खा जावेगी तब तो कहते हैं माया बड़ी दुस्तर है। आधा कल्प माया राज्य करती है। तो जरूर इतनी पहलवान होंगी ना। माया से हराने वाले का क्या हाल हो जाता।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

शिव बाबा याद है? बरसा याद है?